समकालीन कला में भारतीय महिला चित्रकारों का अग्रणीय स्थान

डॉ. कविता सिंह

सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III)
सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

सारांशः–

इस शोध–पत्र में भारतीय समकालीन महिला कलाकारों के अमूल्य योगदान पर नई रोशनी डालने का प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक परिवेश से लेकर आधुनिक काल की विशिष्ट महिला चित्रकारों के मन में झाँकते हुए उनके सुक्ष्म विचारों, संघर्षों, असमानताओं, वेदनाओं, इच्छाओं, व उड़ानों को भी उजागर किया गया है। कला जगत में उनकी उपलब्धियों तथा विषय–विशेष विचारों का भी भरपूर मूल्यांकन करते हुए विस्तृत ढंग से उनकी कला की शैलियों, तकनीकों, विधाओं पर भी पैनी नज़र रखते हुए अद्भुत विशलेषण किया गया है।

मुख्य –बिंदूः–

आधुनिक कला, टैकनोलजी, समकालीन कला, अमृता शेरगिल, मिक्स–मीड़ीया, डिजिटल आर्ट, इंस्टॉलेशन आर्ट, ग्राफिक्स प्रिंट मेकिंग, रेखा चित्र, तैल्य चित्र।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ. कविता सिंह,

समकालीन कला में भारतीय महिला चित्रकारों का अग्रणीय स्थान,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 40.45
Artcile No. 8 (SM 468)

http://anubooks.com/?page_id=581

प्रस्तावना

चाहे यह मान्यना साधारण सी लगे कि कला ज़िंदगी का अनुकरण है व ज़िदंगी कला का। वास्तव में ज़िदगी के शुष्क अतर में बहुत से मूल्यवान तत्वों का स्वाभाविक व सूक्ष्म सम्मिलन होता है जो ज़िन्दगी को सार्थक रूप प्रदान करता है जैसे की भाव, विचार, परंपराएँ, मान्यताएँ, इतिहास, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिंक आस्थाएँ इत्यादि। चिर काल से ही मानव अपनी अंतर–आत्मा तथा कलात्मक आवेगों में छिपे दिव्य तथा आध्यात्मिक भेदों की खोज में लीन रहा है। यह विचार व अपने मूल की सच्चाई को जानने का प्रयास है तथा एक ऐसी यात्रा है जिस द्वारा प्रकृति में छिपे रहस्य व मन की गहराईयों में पनपती इच्छाओं तथा भावनाओं को अपने–अपने ढंग व क्षमता के अनुसार उजागर करने का साधन है।[1] पुरातन भारतीय विचारधारा के अनुसार कला हमें इस दर्शन की ओर ले जाने का अद्भुत वाहन है जिसमें कलाकार न केवल भौतिक परंतु आध्यात्मिक सच्चाई को बाखूबी अपने चुने हुए माध्यम व तकनीक के द्वारा दर्शकों के सन्मुख प्रस्तुत करता है ताकि व अपनी सोच व खोज को जन–जन तक पहुँचा सके। कोई भी परिवेश जिसमें कलात्मकता की रूह न समाई हो, हल्की तथा विचारहीन सी लगती है जिसको जन–मानस स्वीकार करने में असमर्थ महसूस करता है।

आज के आधुनिक युग में पूरा विश्व एक ग्लोबल गांव की तरह माना जाता है जिसमें अनेका –अनेक विचारधाराओं का आसान आदान–प्रदान संभव हुआ है जिसका श्रेय बहुताद में टैकनोलजी को जाता है। बहुत सी नई खिड़कियाँ व दरवाज़े खुले हैं और ताज़ी हवा के झोंकों की तरह अनेक विचारधाराओं, कलाओं, मान्यताओं और शैली व तकनीकों का सुंदर व उत्साहजनक संचार संभव हुआ है जिसने भारतीय समकालीन कला को भी भरपूर रूप से प्रभावित किया है तथा आज भारतीय कलाकार खुले मन से इन विचारधाराओं का सम्पूर्ण परिपालन करते हुए अपनी कला में एक अद्भुत सच्चाई व तंदुरूस्त मानवीय मूल्यों प्रत्यक्ष अनुसरण उज्जवल कर रहा है जिस कारण उनकी कला में गहराई व सामाजिक वेदनाओं का सचित्र वर्णन देखा जा सकता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि भारत की समकालीन महिला कलाकारों ने भी नई प्रयोग अपनाते हुए अपनी कला को नए आयाम और मायने देते हुए अपना उत्तम व विशेष अग्रणीय स्थान प्राप्त कर लिया है। समकालीन महिला चित्रकारों ने जीवन के हर पहलू को छूने की सफ़ल तथा सच्ची कोशिश की है जो मानव की परिस्थितियों, आशाओं, वेदनाओं, संघर्षों चाहे वे लिंग–भेद व सामाजिक परंपराओं और असमानताओं से जुड़ी हो या उनके खुले मन की उड़ान तथा नई ऊँचाईयों को छूने का यत्न हो का प्रसंग उनकी भावपूर्ण कलाकर्षतियों में विद्यमान है। इस वैचारिक संघर्श में बहुत कलात्मक विविधता है जो दर्षकों के मन–मस्तिष्क पर घहरी छाप छोड़ते हुए आधुनिक मानव को रोमांचित करने के साथ–साथ नई सोच का भी संचालन करती है। जर–जर मान्यताओं की जगह अब प्रगतिषील विशयों को बल देते हुए महिला चित्रकारों ने अपनी अनूठी कलाकृतियों के द्वारा एक नए युग का सूर्योदय किया है।

वास्तव में संवेदनषील कलात्मक सोच का शुभारंभ 1930 में महान महिला चित्रकार अमृता शेरगिल ने किया था **(1)** और नई सोच के बीज जो उन्होंने बोए थे आज की महिला चित्रकार उस पथ पर ही चलते हुए आष्चर्यजनक गहराईयों व भावों से ओत–प्रोत चित्रों का बाखूबी सृजन कर रही हैं तथा एक नई कला क्रांती की प्रबल तथा प्रचण्ड ज्वाला से कला जगत की समृद्धता को रोशन कर रही है।[2]

महिला चित्रकारों ने सिक्के के दूसरे पहलू को भी उजागर करने का बीड़ा उठा रखा है तथा हर छोटी–बड़ी स्थिति व परिस्थिति को अपने ब्रश की जादूमयी छोह से केनवास पर नए–नए ढंग से उतारा है जिसमें कुछ ऐसे विशय देखे जा सकते हैं जो आज के समाज व दुनिया के सामने विराट व विकराल रूप में डट के खड़े हैं जैसे की आतंकवाद, घरेलु हिंसा, बाल शोषण, गरीबी, अनपढ़ता, युद्ध से प्रभावित लाखों लोग जिन्हें घर व रोज़ी –रोटी की तलाश है का भी वर्णन देखा जा सकता है। लिंग–भेद, रंग–भेद और मानसिक यातनाओं से जो उथल–पुथल का वातावरण बड़ता जा रहा है पर भी इस संवेदनशील महिला कलाकारों की पैनी नज़र है। वातावरण का विनाश और सामाजिक असमानताओं व भेद–भावों को भी इस नई पीड़ी की महिला चित्रकारों ने अपनी कला में तरजीह दी है।

यह हर्ष की बात है की इन समकालीन महिला चित्रकारों ने न केवल पारम्परिक माध्यमों का उपयोग किया है, बल्कि मिक्स–मीडीया, डिजिटल आर्ट, इंस्टॉलेशन आर्ट, ऐक्रेलिक व तैलय चित्रों के साथ–साथ ग्राफिक्स प्रिंट मेकिंग व अनेक माध्यमों में बनाई गई मूर्तियों में भी निपुणता प्राप्त कर रखी है। प्रमुखता अग्रण श्रेणी की महिला कलाकारों में अनुपम सूद, गोगी सरोज पाल, भारती खेर, अर्पणा कौर, माधवी पार्रिख, कंचन चंद्र, नवजोत अल्ताफ, अर्पिता सिंह, अंजलि इला मेनन, अंजु दोधीया, नलीनी मलीनी, शुक्ला सामंत , सुरूचि चाँद, माया बर्मन, नीलीमा षेख, अनीता दुबे, षिल्या गुप्ता, रेखा रौतवितिया, रिनी धूमल, वसुंधरा तिवारी, जया गांगुली, जयश्री चक्रवर्ती, मीथू सेन व कविता सिंह निरंतर रूप स कला यात्रा का नए पटल पर स्थापित करन में योगदान दे रहे हैं। आज भारत का एक कला समृद्ध देश माना जा सकता है क्योंकि यहाँ की महिला कलाकार जागरूक होकर सामाजिक व कलात्मक ज़िम्मदारी का परिचय देते हुए अपने खुले मन की आवाज़ औरों तक पहुँचा रही हैं और इन कलाकारों का लोहा कला जगत के मशहूर आलोचक भी मान चुके हैं।

अनुपम सूद मुख्यता अपने रेखा–चित्रों तथा ग्राफिक्स प्रिंट द्वारा नारी के मन–मस्तिष्क व इच्छाओं, समानताओं तथा विचारों का वर्णन करती हैं जिनमें उसके संघर्ष, सफलताओं व असफलताओं की उधेड़–बुन को बड़ी ही रोचक ढंग से बयान किया गया है।[3]**(2)** इसी प्रकार अर्पिता सिंह, भारती खेर **(3)** व अर्पणा कौर नारी विशेष चित्र बनाकर हिंसा, युद्ध तथा इतिहास के सुखद व दुखद अध्यायों की अभीव्यक्ति करते हुए कला प्रशंसकों को मंत्र–मुग्ध कर लेती हैं।**(4)** गोगी सरोज पाल के प्रसिद्ध चित्रों में कामधेनु,**(5)** कीनारी,**(6)** हठयोगिनी काली,**(7)** हठयोगिनी शक्ति, नायिका–भेद का वर्णन है जिसके बहुत सूक्ष्म अर्थ हैं तथा नारी की समानता का ध्वज लहराते हुए प्रतीत होते हैं।[4] कंचन चंद्र ने बहुत सी सामान्य दिखने वाली वस्तुओं जैसे की सिक्के, चाबियाँ, बटन, धागे, ताले, चमचे, सितारे, गोटा–तीले का प्रयोग करते हुए अनूठे विचारों का चित्रण किया है जिनमें प्रत्यक्ष तौर से पितृसत्तात्मक समाज की कुरीतियों व प्रभावों का असर देखने को मिलता है।[5]**(8)** इसी तरह महान महिला चित्रकार अर्पिता सिंह ने अपने चित्रों में बिन्दु, आकार, झंड़े, पक्षी, कार, विमान, पिस्तौल, वकील तथा बच्चियों के खिलौनों का रोचक ढंग से विधिवत संयोजन किया है जो नारी के हृदय का रोचक ढंग से प्रगटावा है जो कि दिन–प्रतिदिन हिंसा, संघर्ष व शोषण तले दबी मानवता की बेबसी पर कटाक्ष है।[6]**(9)**

अंजलि इला मेनन की भी अपनी ही प्रभावपूर्ण शैली है जिसमें स्त्री के महान भावों का संचार है। खाली –खाली आँखों वाली महिलाएँ टकटकी लगाकर दूर कहीं किसी के इंतजार में स्थिर खड़ी है

शायद एक नए युग की आहट का सुनने में लीन हैं।**(10)** रेखा रौतवितिया के चित्र अर्थपूर्ण संवेदनाओं से भरपूर हैं तथा व एक जादूमयी ढंग से अपनी व्यथा को दर्षकों तक पहुँचाती हैं जिनमें कुछ चिन्ह पारम्परिक तथा उदारवादी विचारों का सुंदर मिश्रण है।**(11)** नारी के आकार को मुख्य रूप से सामने रख कर नवजोत अल्ताफ ने अद्भुत व महीन अर्थों से नारी–भेद के सुंदर चित्रों में एक सामाजिक असमानताओं का रंग भरा ह वास्तव में हम सब सामान्य रूप से जिसको भू–देवी, शक्ति व मातृ देवी का नाम देते हे जो हर पल नए संघर्षों से ग्रस्त रहती है तथा अपनी सच्चाई को खोजने में सदैव व्यस्त है।**(12)** माया बर्मन का स्वप्नमयी संसार उसके शांतीपूर्ण व सुखद चित्रों में विद्यमान है।**(13)** कविता सिंह के चित्रों में बचपन की यादों के चिन्हों का प्रयोग करते हुए जैसे कि कागज की नाव, कुकुरमुत्ता से लदे पहाड़, कल–कल करती नदियाँ व नाले, मत्सय–कन्याओं व सतरंगी झूलों का दर्षन है जो षांत वातावरण की कामना से भरपूर है।**(14)**

हर भारतीय को यह सुखद अभिमान है कि भारत की समकालीन महिला चित्रकारों का कला जगत में योगदान निरंतर बढ़ता ही जा रहा है तथा नई पीढी के अनगिनत महिला व युवा चित्रकार इनसे प्रेरणा लेते हुए नित नए कलात्मक पड़ावों को पार करते हुए, भारत कला जगत को समषद्धि प्रदान कर रहे हैं। आज इन कलाकारों की ख्याती भारत की सीमायों को पार करते हुए देश–विदेश में भी पहुंच चुकी है जहाँ इनके अनगिनत प्रषंसक हैं जो इनकी कला विधाओं से परिचित हैं।

संदर्भ –ग्रंथ सूचीः–

1. **दासगुप्ता, एस. एन.;** 1954, *फनड़ामैन्टलस ऑफ इण्डीयन आर्ट,* भारतीय विद्या भवन, बम्बई, पृष्ठ–45.
2. **मागो, प्राण नाथ ;** 2000, *कन्टेम्परेरी आर्ट इन इंडिया–अ पर्स्पेक्टिव,* नैशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ–38
3. **मेनन, अंजलि इला ;** 2001, *ऑटोबाइआग्रफीस, शीयर एण्ड़ रॉ–द बॉडी,* आउट्लुक, द वीकली न्यूज़ मैगज़ीन, नई दिल्ली, पृष्ठ–37
4. **शर्मा, मौसमी ;** सितंबर, 12, 2011, *सेलीब्रैटिंग वुमन्हुड़ विद अ ब्रश स्ट्रोक,* द एशियन एज, दिल्ली
5. **मैडॉक्स, जॉर्जीना ;** नवंबर 18, 2011, *हर फेयर लेड़ीज,* द इण्ड़ीयन एक्सप्रेस, दिल्ली
6. **मागो, प्राण नाथ ;** 2000, *कन्टेम्परेरी आर्ट इन इंडिया–अ पर्स्पेक्टिव,* नैशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृष्ठ–171
7. **मेनन, अंजलि इला ;** 2001, *ऑटोबाइआग्रफीस, शीयर एण्ड़ रॉ–द बॉडी,* आउट्लुक, द वीकली न्यूज़ मैगज़ीन, नई दिल्ली, पृष्ठ–38